प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण जीवन

प्रा.डॉ.शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन
हिंदी विभागाध्यक्ष सहयोगी प्रोफेसर
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय बदनापूर,
तह.बदनापुर,जि. जालना (महाराष्ट्र)
मो. न. 8669169236

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद को "उपन्यास सम्राट" और यथार्थवादी कथा-साहित्य का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने भारतीय ग्रामीण समाज के जीवन, उसकी समस्याओं, संघर्षों, शोषण, गरीबी, सामाजिक विषमताओं तथा मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत सजीव और यथार्थ चित्रण किया है। प्रेमचंद का अधिकांश साहित्य भारतीय गाँवों की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जहाँ किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और वंचित वर्ग के जीवन की वास्तविक तस्वीर दिखाई देती है। उनका साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और जन-जागरण का सशक्त साधन भी है।

प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन का आदर्शवादी नहीं, बल्कि यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया है। उनके गाँवों में गरीबी, अशिक्षा, बेरोज़गारी, जातिगत भेदभाव, जमींदारी शोषण और आर्थिक विषमता जैसी समस्याएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। साथ ही गाँवों की मानवीय संवेदनाएँ, पारिवारिक संबंध, सहयोग और लोकसंस्कृति भी उनके साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा

प्रेमचंद के साहित्य का सबसे प्रमुख पात्र किसान है। किसान दिन-रात मेहनत करता है, फिर भी ऋण, लगान और प्राकृतिक आपदाओं के कारण उसका जीवन कठिन बना रहता है।

'पूस की रात' में हल्कू का चरित्र एक ऐसे किसान का प्रतिनिधित्व करता है जो ठंड से बचने के लिए कंबल तक नहीं खरीद पाता। आर्थिक अभाव उसके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी बन जाता है। 'गोदान' में होरी भारतीय किसान के संघर्ष, शोषण और सामाजिक दबावों का प्रतीक है। उसका सपना केवल एक गाय का स्वामी बनने का है, किंतु आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ उसे जीवनभर संघर्षरत रखती हैं।

प्रेमचंद ने ग्रामीण समाज में व्याप्त जाति-व्यवस्था और छुआछूत का सशक्त चित्रण किया है। 'ठाकुर का कुआँ' में दलित स्त्री गंगी की पीड़ा के माध्यम से सामाजिक भेदभाव को उजागर किया गया है। 'सद्गति' में दुखी चमार का जीवन और उसकी मृत्यु जातिगत अन्याय तथा शोषण की अमानवीयता को सामने लाती है।

प्रेमचंद ने ग्रामीण स्त्रियों को केवल गृहिणी के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील, संवेदनशील और आत्मसम्मान से परिपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है। 'बड़े घर की बेटी', 'गोदान' की धनिया तथा अन्य स्त्री पात्र परिवार की आर्थिक, सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए दिखाई देते हैं। धनिया अन्याय का विरोध करने का साहस भी रखती है।प्रेमचंद की कहानियों में ग्रामीण जीवन के साथ-साथ मानवीय करुणा, प्रेम, सहयोग, त्याग और नैतिकता के मूल्य भी प्रमुख हैं।'ईदगाह' में बालक हामिद अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदकर त्याग, प्रेम और संवेदनशीलता का आदर्श प्रस्तुत करता है। यह कहानी ग्रामीण जीवन की गरीबी के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का भी उत्कृष्ट उदाहरण है।प्रेमचंद ने जमींदारों, महाजनों और सामंती व्यवस्था द्वारा किसानों एवं गरीबों के शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। उनका साहित्य सामाजिक न्याय और समानता का संदेश देता है। प्रेमचंद के साहित्य में गाँव की लोकभाषा, लोकरीतियाँ, पर्व-त्योहार, पारिवारिक संबंध, सामुदायिक जीवन और भारतीय संस्कृति का स्वाभाविक चित्र मिलता है। उनके पात्र और संवाद ग्रामीण परिवेश को जीवंत बना देते हैं।

रंगभूमि' उपन्यास में शहर और देहात का संघर्ष है। यह संघर्ष गाँव की चिरपुरातन सहकारी सभ्यता और आगत औद्योगीकरण के बीच है। "रंगभूमि में भारतीय पूँजीवाद के शैशव का चित्रण है। इसमें पूँजीवाद अभी घुटनों के बल पर चल रहा है।" उपन्यास के नायक सूरदास के पास दस बीघे ज़मीन थी, जिस पर मुहल्ले की गाय भैंसे चरती थीं, इस जमीन से उसे कोई आमदनी न थी। वह इसे मात्र इसलिए बचाए रखना चाहता है क्योंकि वह बाप-दादों की निशानी है। मि.जानसेवक उसकी जमीन छीननी चाहते हैं, भले ही उनके शहर में बड़े-बड़े बंगले हैं । परन्तु जानसेवक उसकी जमीन लेना चाहते हैं, जो सामन्ती सम्पत्ति का प्रतीक बन गई है। जानसेवक और सूरदास का यह संघर्ष वैयक्तिक नहीं रह जाता बल्कि वह पूंजीवाद और सामंतवाद का संघर्ष बन जाता है।

प्रेमचंद के 'कर्मभूमि' नामक उपन्यास की रचना भारतीय स्वातंत्रता आंदोलन के उस दौर के समय हुई, जब राष्ट्र ने स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए प्राणों की बाज़ी लगा दी थी। 'कर्मभूमि' में

किसानों के प्रश्न को लेकर भी एक आन्दोलन चला है। "कर्मभूमि में दो आन्दोलन हैं। एक शहर में, एक गाँव में। शहर का आन्दोलन म्यूनिसिपल के खिलाफ है, गाँव का जमींदार के खिलाफ।" घोर आर्थिक संकट में पड़े हुए किसान अपने जमींदार महंत के लगान की रकम दे पाने के योग्य नहीं रह गए हैं। कर्मभूमि के महंत आसामियों ने जो लगानबंदी का आन्दोलन चलाया है, उसके साथ भी सरकार का प्रत्यक्ष संबंध तो नहीं है किन्तु उसमें सरकार कहीं न कहीं आ ही जाती है। किसानों की मांग है कि भयानक मंदी को देखते हुए लगान में छूट दी जाए। महंत ने अमरकान्त को बताया कि सरकार उनको जितनी मालगुजारी छोड़ देगी, वह भी किसानों को उतनी ही लगान छोड़ देगा। 'कर्मभूमि' उपन्यास युग का यथार्थ चित्रण और युग के यथार्थ पर गहरा व्यंग्य है।

प्रेमचंद के सशक्त व सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास 'गोदान' का होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में किसान का सहज-सरल आंतरिक जीवन-जैसा कि वह है, सामने रखने का प्रयास किया है। गोदान की शुरूआत किसान जीवन के लम्बे ऐतिहासिक आकलन पर आधारित है। "गोदान का नायक न केवल उपन्यास का नायक है बल्कि भारतीय किसान का प्रतिनिधि चरित्र भी। वह व्यवहार-कुशल है, ईश्वरवादी है, भाग्यवादी है, परम्पराओं और रूढ़ियों को मानने वाला है, भीरू है तथा जरूरत पड़ने पर छल और चोरी भी करने वाला है।" इस उपन्यास में प्रेमचंद का प्रयास जमींदार और किसानों के आंतरिक, भावात्मक और वैचारिक जीवन का चित्रण करना रहा है। प्रसंगवश भले ही सम्पूर्ण समाज का चित्रण कर दिया गया है, परन्तु उपन्यास की धुरी किसान का दैनिक जीवन है। उपन्यास में युवा किसान के मन में कान्ति के बीज भी हैं। गोबर के व्यक्तित्व में वह कहीं-कहीं अंकुरित भी होता है। वह कहता है, "दादा का ही कलेजा है यह सब कुछ सहते हैं, मुझसे तो एक दिन न सहा जाए।" इससे जाहिर है कि युवा किसान कहीं न कहीं अपनी परिस्थितियों की असलियत समझ रहा है और उन्हें क्या करना चाहिए, यह भी समझ रहा है। गोदान में गांव के साथ शहर का कथानक रखकर प्रेमचंद अपने समय के समाज का सम्पूर्ण चित्र पेश करना चाहते हैं। उनका लक्ष्य भारतीय जीवन की विशाल धारा को चित्रित करना है। गांव की पुरानी व्यवस्थाएं छिन्न-भिन्न हो रही हैं, किसान और जमींदार दोनों टूट रहे हैं। होरी न अपने मरजाद की रक्षा कर पाता है, न जमीन की। उसका बेटा गोबर शहर की शरण लेता है। जमींदार टूटती हुई सामंतवादी व्यवस्था में एक ओर गांव का शोषण करता है और स्वयं शहर के महाजनों द्वारा शोषित होता है।

'सेवासदन' उपन्यास प्रेमचंद की और सम्भवतः हिन्दी साहित्य की अद्भुत कृति है। इस उपन्यास में प्रेमचंद पुलिस, महन्त और जमींदार का जो खाका उपस्थित करते हैं, उसे उन्होंने किसी न किसी रूप में अपनी अन्य कृतियों मे भी चित्रित किया है। इस उपन्यास में उन्होंने चित्रित किया है कि सुरक्षा के लिए जिम्मेवार पुलिस सुरक्षा को, नैतिकता का आदर्श मठाधीश पाप को और किसानों के पोषक स्वामी जमींदार शोषण को अपने जीवन का कार्यक्रम बनाकर चलते हैं। उपन्यासकार समाज के इस स्वरूप को निर्भयता और निमर्मता से सामने रख देता है। जमींदार को चाहिए कि वह कृषक वर्ग का उदार करने की ओर कदम बढ़ाए किन्तु वह खुद पुलिस, प्रशासन, नेतागण के हाथ की कठपुतली ही है। "सदन के शुद्ध मन के भीतर किसानों के लिए दुख दर्द है। वह उनकी सहायता करना चाहता है। लेकिन जैसे ही उस पवित्र भावना पर इस चेतना का आरोप हो जाता है कि वह खुद भी जमींदार है, वह अपनी दृढ़ता के पथ से विचलित होने लगता है।" प्रेमचंद की जमींदारों को सलाह है कि वह किसान की सहायता करें जो उनके अस्तित्व के पीछे हैं अन्यथा किसान खत्म हो जाएगा। जिससे जमींदार के अस्तित्व को भी खतरा है।

प्रेमचंद ने 'पूस की रात' (1930ई.) में किसान की वास्तविक हालत की नाटकीय अभिव्यक्ति की है। इसकी पृष्ठभूमि में महामंदी की भूमिका है। किसान, विशेष रूप से छोटे किसानों की तबाही की दास्तान इसमें है। "जाड़े के मौसम और सहना साहूकार के जुल्म की दोहरी मार के बीच छटपटाता हल्कू एक बहुत ही छोटा और गरीब किसान है। पूस के मौसम में रात को अपनी छोटी सी फसल की रक्षा के लिए खून जमा देने वाली ठंड में पहरा देने के लिए हल्कू को एक कंबल चाहिए। जिसे खरीदने के लिए उसकी पत्नी मुन्नी ने बमुश्किल तीन रूपया बचा के रखा था, पर सहना साहूकार की गाली और अपमान से बचने के लिए वह तीन रूपया उसे देना पड़ता है।" किसान(हल्कू) कर्जदार है। उसने मजदूरी करके तीन रूपए कमाए हैं ताकि कंबल खरीदा जा सके, जिससे पूस की रात में खेत की रखवाली कर सके। उन रूपयों को महाजन ले गया। इस तरह हल्कू किसान से मज़दूर बन जाता है। प्रेमचंद की नज़र में, स्वयं हल्कू की नज़र में और ग्राम्य समाज की नजर में उसका पतन हो जाता है।

उनकी 'कफन' कहानी ऐसी सामाजिक व्यवस्था की कहानी है जो श्रम के प्रति आदमी में हतोत्साह पैदा करती है, क्योंकि उसे श्रम की कोई सार्थकता दिखाई नहीं देती। बीस साल तक यह व्यवस्था आदमी को भर पेट भोजन के बिना रखती है। इसलिए आवश्यक नहीं कि अपने परिवार के

ही सदस्य के मरने जीने से ज्यादा चिंता उन्हें पेट भरने की होती है। प्रेमचंद ने किसानों पर ज्योति(1933), नेउर(1933), दूध का दाम(1934) आदि कहानियां लिखीं। इनमें किसान परिवार की आन्तरिक मूल्य व्यवस्था का चित्रण है और उनके सामाजिक, धार्मिक शोषण की प्रक्रिया इसमें दिखाई गयी है। अतः प्रेमचंद की कहानियां भारतीय ग्रामीण जीवन का महाआख्यान हैं । उनके जीवन का कोई कोना उनकी नज़र से नहीं छूटा।

बी.बी.सी. हिंदी में प्रकाशित विनोद वर्मा के साथ हुए साक्षात्कार *रचना दृष्टि की प्रासंगिकता-मन्नू भंडारी* में मन्नू भंडारी प्रेमचंद के विषय में बताती हैं कि-"साहित्य के प्रति और साहित्य के हर दृष्टि के प्रति यानी चाहे राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक सभी को उन्होंने जिस तरह अपनी रचनाओं में समेटा और खासकरके एक आम आदमी को, एक किसान को, एक आम दलित वर्ग के लोगों को वह अपने आप में एक उदाहरण था. साहित्य में दलित विमर्श की शुरुआत शायद प्रेमचंद की रचनाओं से हुई थी.

प्रेमचंद के इस कथन में कितनी गहराई, कितना सार है। गाँव का मतलब है सरलता और सादगी। लेकिन गरीबी और सामाजिक अन्याय भी इसी मिट्टी में पनपे हैं। और इसके जाल से कोई बचा नहीं । जिस समय प्रेमचंद ने साहित्य की सेवा शुरु की थी, उस समय देश में अंग्रेज शासक थे, किसान कर्ज में डूबा था, क्रांति की लहर देश में हल्की-हल्की चल रही थी। भारत गाँवों का देश तब भी था और अब भी है। लोग गाँव भले ही छोड़ देते हैं, लेकिन दिल से गाँव नहीं जा पाता। उसकी मिट्टी, उसकी खुशबू लोग साथ-साथ ले जाते हैं। कलम के सिपाही प्रेमचंद के उपन्यास और कहानियों के गाँव बिल्कुल जाने पहचाने लगते हैं और हमारे साथ ही रहते हैं।

अतः आज भी उनके गाँव उतने ही सामयिक हैं जितने कि तब। गाँव शायद अब उतने सरल नहीं हैं। जात-पात और भी न जाने कितनी क्रीतियाँ आ गई है फिर से और गाँव को दूषित कर रही हैं। लेकिन नहीं बदला है तो उनका हृदय। प्रेमचंद के कलम में बड़ी शक्ति थी। उर्दू और हिन्दी में कहानी, कविताएँ, उपन्यास लिखते हुए वह हमेशा मिट्टी से जुड़े रहे। "आकाश में उड़ने वाले पक्षी को भी अपने घर की याद आती है' शायद उन्होंने जमीन से जुड़ने की बात को ही लेकर कहा था।

संदर्भ:

1.डॉ. रामबक्ष, 'प्रेमचन्द और भारतीय किसान', वाणी प्रकाशन, दिल्ली

2. डॉ. सरोज प्रसाद, 'प्रेमचन्द के उपन्यासों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफलन', रचना प्रकाशन, इलाहाबाद

3. सं. डॉ. इन्द्रनाथ मदान, 'प्रेमचन्दः चिंतन और कला' सरस्वती प्रेस, बनारस(प्रकाशन वर्ष अनोपलब्ध)

4. राजेश्वर गुरू, 'प्रेमचन्दः एक अध्ययन', एस. चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली